उर्वशी : एक मूल्यांकनपरक अध्ययन

डॉ॰ पुष्पा कुमारी*

सारांश -

साहित्य युगीन परिस्थितियों की वाहक होती है। साहित्य और युग परिवेश के बीच साहित्यकार की कला सेतु निर्माण करती है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के युग प्रर्वतक साहित्यकार रामधारी सिंह दिनकर ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में समान भाव से लेखनी चलाई है। दिनकरजी आलोचक, कहानीकार, निबंधकार के साथ-साथ एक महान कवि भी हैं। 'उर्वशी' दिनकरजी की सर्वश्रेष्ठ कृति है। यह एक प्रेमाख्यानक खंडकाव्य है, जिसमें मानव और दिव्यप्रेम, शरीर और आत्मा, संस्कार और स्वच्छंदता के द्वन्द्व को अत्यंत गहराई से प्रस्तुत किया गया है। उर्वशी-पुरुरवा प्रेम कथा का वर्णन सर्वप्रथम ऋगवेद में मिलता है। 'उर्वशी' का कथानक एक पौराणिक कथा पर आधारित है जिसमें स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी और पृथ्वी के राजा पुरुरवा के प्रेम सम्बन्धों को मनोवैज्ञानिक बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। 'उर्वशी' में नारी के तीन प्रमुख रूपों और उनकी समस्याओं का निरूपण मिलता है--प्रेयसी, पत्नी और माता। 'उर्वशी' खंडकाव्य में सौन्दर्य के मुख्यतः चार रूप मिलते हैं-- मानवीय सौन्दर्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, वस्तुगत सौन्दर्य और कलागत सौन्दर्य। इस खंडकाव्य में काम की तीन अवस्थाओं का चित्रण मिलता है-- जैव भावनात्मक अवस्था, बौद्धिक अवस्था और आत्मिक अवस्था। इसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम का प्रतिपादन हुआ है। मानवीय आकांक्षाओं एवं वितृष्णाओं की संगम स्थली 'उर्वशी' खंडकाव्य में दर्शन पक्ष का भी पर्याप्त एवं स्पष्ट विवेचन हुआ है।

बीज शब्द -

प्रेमाभिव्यंजना, कामाशक्ति, सौन्दर्यबोध, नारीस्वरूप, दार्शनिक पक्ष, साहित्य, युग परिवेश, साहित्यकार, कला, आधुनिक हिन्दी साहित्य, रामधारी सिंह दिनकर, आलोचक, कहानीकार, निबंधकार, कवि, उर्वशी, खंडकाव्य, ।

प्रस्तावनाः-

साहित्य युगीन परिस्थितियों की वाहक होती है। समाज की बहुविध अभिव्यक्ति साहित्य की परिसीमा निर्धारित करती है। प्रभावित परिवेश और मौलिक चिंतन से साहित्य सर्जना व्यापार परिचालित होता है। साहित्यकार की महानता उसकी रचनाओं में समाज की सम्पूर्ण व्याख्या पर निर्भर करती है। साहित्य और युग परिवेश के बीच साहित्यकार की कला सेतु निर्माण करती है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के युग प्रर्वतक साहित्यकार रामधारी सिंह दिनकर एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनका सृजन-संसार उक्त विशेषताओं की संवाहिका है।

दिनकरजी का काव्य-संसारः-

दिनकरजी ने साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में समान भाव से लेखनी चलाई है। आलोचक, कहानीकार, निबंधकार के साथ-साथ दिनकरजी एक महान कवि भी हैं। इन्होंने काव्य के तीनों रूपों यथा--प्रबंधकाव्य, खंडकाव्य एवं मुक्तककाव्य के रूप में हिन्दी साहित्य जगत को काव्य संपदा से सुसम्पन्न किया। प्रबंधकाव्यों में प्रणभंग, कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी; खंडकाव्य उर्वशी तथा मुक्तक काव्य संग्रह में रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, द्वन्द्वगीत, सामधेनी, बापू, इतिहास के आँसू, धूल और धुआँ, दिल्ली, नीम के पत्ते, नीलकुसुम, चक्रवाल, सीपी और शंख, नये सुभाषित, परशुराम की प्रतीक्षा, मृति तिलक, कोयला और कवित्व आदि है।

'उर्वशी' का परिचयः-

'उर्वशी' एक प्रेमाख्यानक खंडकाव्य है, जिसमें मानव और दिव्यप्रेम, शरीर और आत्मा, संस्कार और स्वच्छंदता के द्वन्द्व को अत्यंत गहराई से प्रस्तुत किया गया है। यह दिनकरजी की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसमें समस्त काव्य प्रवृतियों का सुन्दर परिपाक हुआ है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण रामधारी सिंह दिनकर को 'उर्वशी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'उर्वशी' एक ऐसा खण्डकाव्य है जिसे दृश्यकाव्य की श्रेणी में भी रखा जा सकता है क्योंकि नाटक के सभी मान्य लक्षणों का निर्वाह इस कृति में हुआ है तथा गीतमय रूप में इसकी प्रस्तुति इसे 'गीतिनाट्य' के रूप में भी स्थान देती है। गीतिनाट्य की विशेषता में प्रमुख है--वैयक्तिक अनुभूति की तीव्रता को संगीतात्मकता के साथ प्रस्तुत करना। इसमें इसका पूर्ण निर्वहण हुआ है। पाँच अंकों में विभक्त इस गीतिनाट्य में दृश्यों के नामांकन के स्थान पर काल एवं स्थान को सूचित किया गया है। ग्रन्थ में सूत्रधार एवं नटी नाटक को आरंभ कराते हैं। रंगमंचीयता के सभी पहलूओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इसकी कथावस्तु, पात्र, संवाद, संकलनत्रय, उद्येश्य, नेपथ्य का उपयोग तथा आकाशभाषित की योजना की गई है। यही कारण है कि "आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं डॉ॰ नगेन्द्र इसे गीतिनाट्य ही मानते हैं।"[1]

उर्वशी का कथानकः-

पाँच अंकों में विभक्त उर्वशी की कथावस्तु के प्रथम अंक में नटी और सूत्रधार नूपुरों की ध्वनि सुनकर, अप्सराओं को अवतरित देखते हैं और छिपकर उनकी बातें सुनते हैं। दैत्य द्वारा अपहृत स्वर्गलोक की अप्सरा उर्वशी को पृथ्वीलोक के राजा पुरुरवा द्वारा बचाना और पुरुरवा के प्रति उर्वशी के आकर्षण की चर्चा चल रही है। इसी बीच चित्रलेखा आकर बताती है कि उर्वशी के प्रति राजा की अनुरक्ति और व्याकुलता देखकर वह उर्वशी को पुरुरवा के पास क्रीड़ावन में छोड़ आयी है।

द्वितीय अंक में महारानी औशिनरी को महाराज पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी के प्रेम सम्बन्ध प्रगाढ़ता की जानकारी होती है जिससे आहत होकर वह तत्क्षण अपना प्राण त्यागना चाहती है किन्तु एक वर्ष बाद महाराज द्वारा नैमिषेय यज्ञ करने में पत्नी के रूप में उनके कर्तव्यों की अनिवार्यता को ध्यान में रखकर महारानी अपना निर्णय बदल देती है। इसके साथ ही पाठकों के हृद्य में आदर्श भारतीय नारी की छवि बनाती है।

तृतीय अंक में महाराज पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी के मनोभावों के अतिरिक्त कथानक में ज्यादा कुछ विकास नहीं होता।

चतुर्थ अंक में महर्षि च्यवन के आश्रम में सुकन्या नामक पात्र के गोद में महाराज पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी के शिशु-पुत्र 'आयु' को दिखाया गया है। उसी समय चित्रलेखा का आगमन होता है। तभी उर्वशी आकर अपने पुत्र का आलिंगन करती है और स्वयं का भरत मुनि के शाप से स्वर्ग च्युत होने की कथा सुनाती है। जिसके अनुसार उर्वशी पति या पुत्र किसी एक को ही पा सकेगी। इसलिए पुत्र को सुकन्या के पास छोड़ वह राजा पुरुरवा के पास चली जाती है इधर महाराज पुरुरवा का नैमिषेय यज्ञ भी पूरा हो जाता है।

पंचम अंक में महाराज पुरुरवा अपने राजप्रसाद में राजज्योतिष के साथ स्वप्न साझा करते हैं। स्वप्न में राजा पुरुरवा ऋषि च्यवन के आश्रम में एक दिव्य बालक का दर्शन करते हैं। राजज्योतिष उस स्वप्न का फल बताते हुए भविष्यवाणी करते हैं कि राजन आप आज संध्या तक पुत्र को राज सौंपकर प्रव्रजित हो जायेंगे। तभी सुकन्या उर्वषी और पुरुरवा के पुत्र को लेकर राजसभा में आती है। वह दिव्य बालक सुकन्या के निर्देशानुसार अपने माता-पिता को प्रणाम करता है। राजा को पुत्र प्राप्ति होती है और तभी शाप के कारण उर्वषी स्वर्ग चली जाती है। राजा पुरुरवा क्रोधवश स्वर्ग पर आक्रमण की आज्ञा देते हैं किन्तु आकाशवाणी और महामात्य के समझाने पर पुत्र 'आयु' को राज्य सौंप प्रव्रज्या ग्रहण करते हैं। महारानी सभी वैर भाव भूलाकर 'आयु' को गले लगाती है और राजमाता का पद प्राप्त करती है। इधर सुकन्या भी आशीर्वाद देकर तपोवन चली जाती है।

'उर्वशी' में निहीत मनोवैज्ञानिक पक्षः-

'उर्वशी' का कथानक एक पौराणिक कथा पर आधारित है जिसमें स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी और पृथ्वी के राजा पुरुरवा के प्रेम सम्बन्धों को मनोवैज्ञानिक बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है जिसमें "उर्वशी चक्षु, रसना, घ्राण, त्वक् तथा श्रौत की कामनाओं का प्रतीक है। पुरुरवा रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द से मिलने वाले सुखों से उद्वेलित मनुष्य का। पुरुरवा द्वन्द्व में है क्योंकि द्वन्द्व में रहना मनुष्य का स्वभाव है। मनुष्य सुख की कामना करता है और उससे आगे निकलने का प्रयास भी।' [2] पुरुष नारी के भावमय एवं स्नेहिल स्पर्श के लिए सदैव उत्सुक एवं लालायित रहा है और सापेक्षतः नारी की भी पुरुष के प्रति मनःस्थिति समान भाव की ही रही है।

'उर्वशी' गीतिनाट्य में नारी सौन्दर्य को काम एवं आकर्षण का मुख्य बिन्दु माना गया है। नर और नारी का परस्पर प्रेम सम्बन्ध कायिक और आत्मिक मिलन से परिपूर्ण होता है। 'काम' को वासनामात्र न मानकर विराट प्रेम का प्रतीक माना गया है। काम की इसी अति उन्नत अवस्था को वैदिक शास्त्रों में भी स्वीकार किया गया है। इस प्रकार नर और नारी के रूप में क्रमशः पुरुरवा और उर्वशी के कायिक तृप्तता से आत्मिक संतुष्टि प्राप्त करने की मनोवैज्ञानिक व्याख्या है-- 'उर्वशी'।

'उर्वशी' का भाव तत्व और नारी स्वरूपः-

मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' की नायिका उर्मिला की भांति कवि की उदार दृष्टि से ओझल नायिका का व्यक्तित्व 'उर्वशी' खंडकाव्य की महारानी औशिनरी का भी है। यद्यपि उर्वशी एवं पुरुरवा के प्रेम मिलन के चित्रण में दिनकरजी ने कोई सानी नहीं छोड़ा है फिर भी इस उदार हृद्य कवि की उपेक्षणीयता की शिकार बनी नायिका महारानी औशिनरी के लिए न्याय मांगना तर्कसंगत एवं उचित है। औशीनरी के रूप में उर्वशी गीतिनाट्य का भावपक्ष प्रबल दिखाई देता है।

"उर्वशी में नारी के तीन प्रमुख रूपों और उनकी समस्याओं का निरूपण मिलता है--प्रेयसी, पत्नी और माता।"[3] नायिका उर्वशी में नारी के उक्त तीनों रूप संपूर्णता में प्रतिबिम्बित होते हैं। पत्नी रूप में महारानी औशिनरी का त्याग सचमुच उसे आदर्शवादिता का शीर्षस्थ आसन प्रदान करता है। महारानी औशीनरी के मन की व्यथा और उर्वशी के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति एक साथ इस पद में मिलती है -

"हाय मरण तक जी कर मुझको हलाहल पीना है।
जाने, इस गणिका का मैंने कब क्या अहित किया था,
कब किस पूर्व जन्म में उसका क्या कुछ छीन लिया था,
जिसके कारण भ्रमा हमारे महाराजा की मति को,
छीन ले गई अधम पापिनी मुझसे मेरे पति को।"[4]

मातृत्व पद 'पति-पत्नी' के सम्बन्ध की निकटता और पारदर्शिता का उपहार है। नारी रूपी शस्य स्यामला धरती में बीजांकुरित होकर ही मनुज का संसार में आगमन होता है अर्थात् नारी सृष्टि की बीजक शक्ति है और यही नारी की महानता भी है।

"गलती है हिमशीला, सत्य है, गठन देह की खोकर,
पर, हो जाती वह असीम कितनी पयस्विनी होकर?"[5]

'उर्वशी' में सौन्दर्य-बोधः-

सुन्दर शब्द का भाववाचक पद 'सौन्दर्य' है। सौन्दर्य एक व्यापक सत्ता है। यह अपने वायवीय रूप में स्थूल और सूक्ष्म के बीच संक्रमण की अवस्था है। साथ ही यह आंतरिक और बाह्य दृष्टि बिन्दुओं पर अवधारित होता है। सौन्दर्य की व्यापकता इसके परिसीमन पर अवलंबित है। 'उर्वशी' गीतिनाट्य में सौन्दर्य के मुख्यतः चार रूप मिलते हैं-- मानवीय सौन्दर्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, वस्तुगत सौन्दर्य और कलागत सौन्दर्य।

मानवीय सौन्दर्य पुरुष और नारी के बीच विभक्त है। उर्वशी और पुरूरवा क्रमशः नारी और पुरुष के सौन्दर्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में 'उर्वशी' गीतिनाट्य में दिनकरजी मानवीय सौन्दर्य का दिग्दर्शन कराते हैं।

"कुसुम और कामिनी, बहुत सुंदर दोनों होते हैं,
पर, तब भी नारियाँ श्रेष्ठ है कहीं कान्त कुसुमों से,
क्योंकि पुष्प है मूक और रूपसी बोल सकती है।
सुमन मूक सौन्दर्य और नारियाँ सवाक् सुमन है।"[6]

प्राकृतिक सौन्दर्य से ही 'उर्वशी' गीतिनाट्य का आरंभ होता है। सूत्रधार के शब्दों में, बसन्त ऋतु में शुक्ल पक्ष की चाँदनी रात का मोहक सौन्दर्य निम्नांकित है—

"नीचे पृथ्वी पर बसन्त की कुसुम विभा छायी है,
ऊपर है चन्द्रमा द्वादशी का निमेध गगन में।
खुली नीलिमा पर विकीर्ण तारे यों दीप रहे हैं,
या प्रशान्त निस्सीम जलधि में जैसे चरण-चरण पर
नील वारि को फोड़ ज्योति के द्वीप निकल आये हों।"[7]

वस्तुगत सौन्दर्य के रूप में उदात्त कथावस्तु अर्थात् वण्र्य-विषय की शाश्वतता और अनिवार्यता ही प्रभविष्णुता और सुन्दरता को नायक नायिका के गुणों में समन्वित कर देता है।

'उर्वशी' में कलागत सौन्दर्य में कवि के अभिव्यंजना कौशल अर्थात् शब्द-सौन्दर्य, संगीत-सौन्दर्य, नाद-सौन्दर्य और अलंकार सौन्दर्य का मणिकांचन प्रयोग हुआ है।

'उर्वशी' में प्रेमाभिव्यंजनाः-

उर्वशी-पुरुरवा प्रेम कथा का वर्णन सर्वप्रथम ऋगवेद में मिलता है। लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम का प्रतिपादन 'उर्वशी' गीतिनाट्य में हुआ है। उदात्त प्रेम को पराकाष्ठा तभी प्राप्त होती है जब उसमें वासना की लेशमात्र भी गंध न हो। प्रेम के आठ गुणों उल्लास, ममता, विस्रंभ, अभिमान, द्रवीभाव, अतिशय अभिलाषा, नवनवत्व की भावना, उन्माद के सभी रूप 'उर्वशी' गीतिनाट्य में अभिलक्षित है। चित्रलेखा द्वारा प्रेम की प्रारम्भिक अवस्था का सुन्दर चित्रण किया गया है -

"उफ री! मादक घड़ी प्रेम के प्रथम-प्रथम परिचय की।
मर कर भी सखि! मधु मुहूर्त यह कभी नहीं मरता है।
जब चाहो साकार देख लो उसे बंद आँखों से।"[8]

नारी का रम्य रूप ही उसके गौरव की परिचायिका होती है। अपनी इसी रम्यता के बल पर-- अंग रूप की शक्ति से वह पुरुष पर विजय प्राप्त करती है। नारी का यह प्रेमासिक्त रूप बड़े-बड़े ज्ञानियों, तपस्वियों के तप, ज्ञान और निष्ठा को डगमगा देता है। यह प्रेम कभी-कभी एकांत शारीरिक होता है किन्तु 'उर्वशी' खंडकाव्य में उर्वशी एवं पुरुरवा का यह कायिक प्रेम अंततः आत्मिक प्रेम में तब्दील होकर एकनिष्ठता और श्रेष्ठता प्राप्त करता है। अतः कहा जा सकता है कि उर्वशी एवं पुरुरवा का प्रेम शारीरिक क्षुधा तृप्ति कर तन का अतिक्रमण कर देता है और आत्मिक, व्यापक और उदात्त रूप ग्रहण कर उच्चता प्राप्त करता है।

'उर्वशी' में दर्शन पक्षः-

मानव की समस्त परिचालिका शक्ति सुखों के भोग और दुखों से मुक्ति की ओर अभिकेन्द्रित होती है। मनुष्य की क्रियात्मिका शक्ति इसी उद्येश्य को फलीभूत करती है। मानवीय आकांक्षाओं एवं वितृष्णाओं की संगम स्थली 'उर्वशी' खंडकाव्य में दर्शन पक्ष का पर्याप्त एवं स्पष्ट विवेचन हुआ है। दर्शन के परिप्रेक्ष्य में 'उर्वशी' को पाँच शीर्षकों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

- **ईश्वर -** 'उर्वशी' गीतिनाट्य में ईश्वर सर्वशक्तिमान एवं सृष्टि का स्रष्टा शक्ति है। मनुष्य इसी परमसत्ता की क्रियाओं का मूर्त रूप एवं क्रियात्मिका की परिचालित अवस्था है। ईश्वर और प्रकृति समपदीय सत्ता है तथा दोनों की समान महत्ता है।
- **काल -** काल की निरंतर गतिशीलता प्रगति का सूचक है। प्रगति उच्चता एवं विकास के अवधारणा पर संचालित अभिक्रिया है।
- **देह -** देह भारतीय दर्शन में मूर्त संकल्पना है। इसे नित्य नहीं माना गया है। देह को नश्वर बताया गया है। आत्मा की अमरता ही देह के नश्वरता के सिद्धांत का समर्थन करती है।

"एक स्वाद है त्रिदिव लोक में, एक स्वाद वसुधा पर,
कौन श्रेष्ठ है, कौन हीन, यह कहना बड़ा कठिन है।

जो कामना खींचकर नर को सुरपुर ले जाती है,
वही खींच लाती है मिट्टी पर अम्बरवालों को।"[9]

- **जीवन -** ईश्वर और जगत के बीच कार्य-कारण सम्बन्ध है। इसी कार्य-कारण सम्बन्ध के कारण पुनर्जन्म का दर्शन सिद्धांत संचालित होता है और तदनुरूप मनुष्य कर्मफल का भोग करता है।

"अर्थ खोजते हो जीवन का? लड़ी कार्य-कारण की
बहुत दूर तक बिछी हुई है पीछे अंधियाले में।
चलो जहाँ तक भी, अतीत गह्वर में, चरण-चरण पर
मात्र प्रतीक्षा निरत मग में मिलते जायेंगे।"[10]

- **प्रकृति और पुरुष -** सांख्य दर्षन में प्रकृति और पुरुष की विशद व्याख्या मिलती है। सांख्य दर्शन तीन तत्वों पर आधारित माना गया है।
  - ★ **अव्यक्त -** यह मूलाप्रकृति है।
  - ★ **व्यक्त -** यह कार्य-कारण की परम्परा में मूलाप्रकृति का परिणाम है।
  - ★ **ज्ञ -** यह पुरुष कहलाता है।

☐ **'उर्वशी' -** खंडकाव्य में उर्वशी प्रकृति का स्वरूप है और पुरुरवा पुरुष का। दिनकरजी ने 'उर्वशी' की भूमिका में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। कवि के अनुसार, प्रकृति और पुरुष के संयोग से ही परम तत्व की प्राप्ति होती है। इसलिए इनकी पृथक सत्ता अनिवर्चनीय है।

"द्वन्द्व रंच भर नहीं कहीं भी प्रकृति और ईश्वर में,
द्वन्द्वों का आभास द्वैतमय मानस की रचना है।
यह आभास नहीं टिकता, जब मनुज जान लेता है,
अप्रयास अनुभवन प्रकृति, सहज रीति जीवन की,
क्योंकि प्रकृति और पुरुष एक है, कोई भेद नहीं है।"[11]

☐ **उर्वशी' में काम का स्वरूपः-**

'काम' इच्छा या इन्द्रिय सुख का पर्याय है। अपने व्यापक स्वरूप में काम मानव मन की समस्त क्रियाओं की प्रेरक शक्ति है। उर्वशी खंडकाव्य में काम की तीन अवस्थाओं का चित्रण मिलता है - जैव भावनात्मक अवस्था, बौद्धिक अवस्था और आत्मिक अवस्था।

जैव भावनात्मक अवस्था मनुष्य के समग्र जीवन का आधार है। "काम की ये जो निराकार झंकृतियाँ हैं, वे ही उदात्तीकरण के सूक्ष्म सोपान हैं। त्वचाएं, स्पर्श के द्वारा सुन्दरता का जो परिचय प्राप्त करती है, वह अधूरा और अपूर्ण होता है। पूर्णता पर वह तब पहुँचता है, जब हम सौन्दर्य के निदित्यासन अथवा समाधि में होते हैं।"[12]

'उर्वशी' गीतिनाट्य के तृतीय अंक में उर्वशी और पुरुरवा के जैव भावनात्मक कामावस्था का रूप मिलता है। पुरुरवा न सिर्फ जैव भावनाओं की अवस्था पर खड़ा है बल्कि वह बौद्धिक और आत्मिक दोनों अवस्थाओं में समान रूप से सक्रिय एवं उर्जस्वित है। जबकि उर्वशी सनातन नारी का प्रतीक है जो जैव भावनात्मक कामावस्था की पूर्णता हेतु अप्सरा लोक से धरती लोक पर आ गयी है और काम की आसक्ति ही उसे इस धरातल की सामान्य नारी का स्थान प्रदान करवाती है। पुरुरवा के मन में काम का भाव बौद्धिक अवस्था से परिचालित होकर आत्मिक अवस्था में पूर्णता प्राप्त करता है। पुरुरवा की यह कामाशक्ति की बदलती अवस्था उर्वशी को क्षुब्ध कर देती है और पुरुरवा यहीं से आसक्ति और अनासक्ति के द्वन्द्व में झूलने लगता है। उर्वशी को पुरुरवा का काम के प्रति अनासक्त भाव समझते देर नहीं लगती और वह पुरुरवा के मन पर छाये बौद्धिक कामाशक्ति के भाव को दूर हटाने का भरसक प्रयत्न करती है किन्तु पुरुरवा के आत्मिक कामाशक्ति के आगे विवश हो जाती है। अर्थात् 'उर्वशी' गीतिनाट्य की कामाशक्ति उदात्त एवं परिष्कृत होने के कारण उच्च कोटि की है।

"यह तुम्हारी कल्पना है, प्यार कर लो।
रूपसी नारी प्रकृति का चित्र है सबसे मनोहर।
ओ गगनचारी! यहाँ मधुमास छाया है।
भूमि पर उतरो,
कमल, कर्पूर, कुंकुम से, कुटज से
इस अतुल सौन्दर्य का शृंगार कर लो।"[13]

'उर्वशी' खंडकाव्य का आधरभूत विषय पुरुरवा-उर्वषी की कथावस्तु नहीं अपितु कामानुभूति है। काम मानव की प्रबलतम वृति है। काम भाव से परिचालित होकर ही नर नारी में आकर्षण के बंधन रूप ग्रहण करते हैं। काम की भावना जैव धरातलीय अवस्था से बौद्धिक अवस्था के द्वारा अशरीरी अवस्था अर्थात् आत्मिक अवस्था में प्रवेश कर पूर्णता प्राप्त करता है। नर-नारी का शारीरिक प्रेम एक-दूसरे को आत्मिक प्रेम सौन्दर्य के राहों का अन्वेषी बना देते हैं।

☐ **निष्कर्षः-**

'उर्वषी' एक शृंगार रस प्रधान रचना है। उदात्त प्रेम से संचालित इस खंडकाव्य में उर्वशी एवं पुरुरवा के प्रेम को ईश्वरीय प्रेम का प्रतीक बताया गया है। औदात्त से परिपूर्ण इस खंडकाव्य में मानवीय मन की क्रियात्मिका शक्ति को आधिभौतिक से पराप्राकृतिक अवस्था में परिणत होते दिखाया गया है। इस सम्बन्ध में दिनकरजी ने ठीक ही लिखा है—

प्रकृति नित्य आनंदमयी है, जब भी भूल स्वयं को
हम निसर्ग के किसी रूप नारी, नर या फूलों से
एकतान होकर खो जाते हैं समाधि निस्तल में

खिल जाता है कमल, धार मधु की बहने लगती है,
दैहिक जग को छोड़ कहीं हम और पहुँच जाते हैं,
मानो, मायावरण एक क्षण मन से उतर गया हो।

इस प्रकार 'उर्वषी' आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रेम और स्त्री विषयक काव्य साहित्य में श्रेष्ठ उदाहरण है।

सन्दर्भ :-

1. सम्पादक, कौल, गोपालकृष्ण, दिनकर सृष्टि और दृष्टि, में संकलित लेख--(क) प्रौढ़ किन्तु सुकुमार रचनाः उर्वशी - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा (ख) आत्ममंथन का काव्यः उर्वशी - डॉ॰ नगेन्द्र
2. दिनकर, रामधारी सिंह, 1973, उर्वशी (भूमिका), पृष्ठ संख्या-'ख', उदयाचल प्रकाशन, राजेन्द्र नगर, पटना, पंचम संस्करण
3. जोशी, डॉ॰ दयाकृष्ण, 1981, उर्वशीः समग्र अध्ययन, पृष्ठ सं0- 38, ग्रंथायन प्रकाशन, अलीगढ़, प्रथम संस्करण
4. दिनकर, रामधारी सिंह, 1973, उर्वशी, पृष्ठ संख्या- 31, उदयाचल प्रकाशन, राजेन्द्र नगर, पटना, पंचम संस्करण
5. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 19
6. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 84
7. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 05
8. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 109
9. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 08
10. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 79
11. उपरिवत् पृष्ठ संख्या- 80
12. भाटी, प्रो0 देशराज सिंह, 1980, दिनकर और उनकी उर्वशी, पृष्ठ संख्या- 122, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण
13. दिनकर, रामधारी सिंह, 1973, उर्वशी, पृष्ठ संख्या- 48, उदयाचल प्रकाशन, राजेन्द्र नगर, पटना, पंचम संस्करण

*वरीय सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर, बिहार।